Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 1 | JANUARY 2023

जयपुर संभाग के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

भूपेन्द्र कुमार महेन्द्रा [1] | डॉ. महेश सिंह राजपूत [2]

[1] शोधार्थी (वाणिज्य), श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू

[2] सह आचार्य, वाणिज्य एवं प्रबन्ध विभाग, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू

ABSTRACT:

अपने मूल स्थान से किसी दूसरे स्थान की यात्रा पर्यटन कहलाती है। जब इसी यात्रा में धार्मिक भावना का समागम हो जाता है तो यही यात्रा धार्मिक पर्यटन बन जाती है। धार्मिक पर्यटन को पवित्र पर्यटन, आस्था पर्यटन तथा आध्यात्मिक पर्यटन भी कह सकते हैं। धार्मिक स्थल सामाजिक समरसता, परस्पर सद्भाव, साम्प्रदायिक सौहाद्र के हृदय स्थल हैं। इसमें भावनात्मक एकता के दर्शनों के साथ आध्यात्मिक उन्नति तथा आत्मिक उत्कर्ष को भी बल मिलता है। राजस्थान में कोई भी ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ पर धार्मिक स्मारकें न हो। हर क्षेत्र में किसी न किसी लोक देवी-देवताओं की मान्यता होती है। हर जगह आपको देवालय या कहीं शिवालय मिल जायेंगे। हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक एकता की मिसाल के रूप में कई मस्जिदें व दरगाह दिख जाएगी। जब भी इन्सान परेशानी में होता है। अपनी मन्नतों के पूरी होने पर या नई मन्नतों या मुरादों को माँगने वह धार्मिक स्थलों की ओर अग्रसर होता है। कभी-कभी धार्मिक स्थलों के इतिहास की जानकारी उनकी वास्तुकला, चित्रकारी तथा पवित्र स्थलों के भ्रमण के उद्देश्य से भी धार्मिक यात्राएँ की जाती हैं। राजस्थान के जयपुर संभाग में कई आस्था के केन्द्र हैं। जिसमें से गलता जी, शिला देवी मन्दिर, मोती डूंगरी का गणेश मन्दिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, गोविन्द देव जी का मन्दिर, राणी सती मन्दिर, नरहद पीर की शक्कर बाबा की दरगाह, नारायणी माता, मेहन्दीपुर बालाजी जैसे धार्मिक स्थल बहुत ही प्रमुख हैं।

KEYWORDS:

पर्यटक, धार्मिक पर्यटन, मन्दिर, धार्मिक स्थल, सद्भावना, आस्था।

भूमिका:-

जब कोई व्यक्ति, परिवार या समूह अपने स्थान से कहीं ओर जाता है, तो उसे पर्यटन कहते हैं। लेकिन जब इस यात्रा में धार्मिक भावना भी जुड़ जाती है तो वह धार्मिक पर्यटन कहलाता है। सामान्य शब्दों में कहा जाए तो जब हम किसी धार्मिक स्थल जैसे मन्दिरों, मस्जिदों, गुरूद्वारों या चर्चों जैसे पवित्र स्थल की यात्रा करते हैं तो उसे धार्मिक पर्यटन इसमें व्यक्ति विशेष या समूह की आस्था जुड़ी होती है। धार्मिक पर्यटन को पवित्र पर्यटन, आस्था पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन भी कहा जा सकता है। जिसमें तीर्थ यात्राएँ, धार्मिक या आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए यात्राएँ तथा धार्मिक स्मारकों और कलाकृत्तियों को देखना सम्मिलित है। जो लोग धार्मिक स्थलों पर जाते हैं। जैसे चार धाम, यात्रा, हज या किसी भी मन्दिर या धार्मिक स्थल की यात्रा करते हैं, वो लोग धार्मिक पर्यटक कहलाते हैं।

धार्मिक दर्शनीय स्थलों की यात्रा कई प्रकार की रूचियों से प्रेरित हो सकती है। जैसे- धर्म, कला, वास्तुकला, इतिहास और व्यक्तिगत वंश। हमारा देश भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। इसमें हर धर्म के लोग रहते हैं तथा सबको अपने धर्म तथा आस्था के अनुसार पूजा-पाठ करने का अधिकार है। देश के मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे विश्व भर में प्रसिद्ध है तथा देशी विदेशी सैलानी अपनी आस्था तथा इच्छानुसार इन स्थलों का भ्रमण करता है। राजस्थान में पर्यटन की बहुत सम्भावनाएँ हैं। धार्मिक पर्यटन के लिए भी यह राज्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। उदाहरण के तौर पर राजस्थान के पुष्कर का ब्रह्म मन्दिर पूरे विश्व में ब्रह्म जी का एकमात्र मन्दिर है।

गणेश जी का मोती डूंगरी का मन्दिर जो जयपुर में है, विश्व भर में प्रसिद्ध है। 'पधारो म्हारे देश' जैसी उक्तियों के साथ राजस्थान आपको तीर्थ यात्रा के लिए आमन्त्रित करता है। यहाँ के कई तीर्थों का वर्णन तो स्कंद पुराण, श्री माल पुराण आदि में भी वर्णित है। राजस्थान में तीर्थ स्थलों तथा मंदिरों की इतनी भरमार है कि आप गिनते गिनते थक ही जाओगे। पुष्कर, कोलायत, गलता जी, खाटू श्याम जी, सालासर धाम, रामदेवरा, गोगामेड़ी, देशनोक, सोमेश्वर, गौतमेश्वर ऐसे पर्यटन स्थल हैं। जहाँ हर साल लाखों श्रद्धालु आते हैं। जैन तीर्थों में श्री महावीर जी देलवाड़ा, नाकोड़ा, सच्चियाय माता, रणकपुर तथा पालिताणा विशेष है। मुस्लिम केन्द्रों में अजमेर, नागौर तथा गलियार कोट महत्त्वपूर्ण है।

जयपुर जिले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल:-

गलता जी:-

गलता जी जयपुर का प्राचीन तीर्थ स्थल है। यह शाल्व ऋषि की तप स्थली है। जो जयपुर से लगभग 10 किमी. की दूरी पर स्थित है। मकर संक्रान्ति पर यहाँ पवित्र कुण्ड में डूबकी लगाने लाखों लोग आते हैं। गलता जी में एक ताजा पानी का झरना तथा इसमें 8 पवित्र कुंड हैं। इसमें गाय के सिर की आकृति की एक चट्टान है। जिसे गोमुख कहते हैं। जिससे निरन्तर जलधारा बहती रहती है। जो गंगा के समान पवित्र मानी जाती है। यह तीर्थ स्थल बहुत ही रमणीक स्थान है जो चारों ओर से पर्वतमालाओं से घिरा हुआ है। गलता जी पर सूर्य सप्तमी, राम नवमी, निर्जला एकादशी तथा जल झुलनी एकादशी, सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण स्नानार्थ धार्मिक लोगों की काफी भीड़ लगी रहती है।

गोविन्द देव जी का मन्दिर:-

यह मन्दिर जयपुर का सबसे प्रसिद्ध बिना शिखर का मन्दिर है, जो भगवान श्रीकृष्ण जी को समर्पित है। इस मन्दिर का निर्माण 1590 ई. में राजा मानसिंह द्वारा करवाया गया था। यह मन्दिर लाल बलुआ पत्थरों से निर्मित है। इसमें संगमरमर से निर्मित एक गर्भगृह है। जिसे सोने व चाँदी से सजाया गया है। गोविन्द देव मन्दिर को आमेर के शासकों के कछवाहा राजवंश के प्रमुख देवता के रूप में माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि गोविन्द जी की मूर्ति बिल्कुल भगवान कृष्ण की तरह ही दिखती है। मन्दिर में हिन्दु तथा मुस्लिम वास्तुकला का मिश्रण दिखाई देता है। दीवारों को झूमरों तथा चित्रों से सजाया गया है। मन्दिर के चारों और एक हरा-भरा बगीचा है। जिसे ताल कटोरा के नाम से जाना जाता है। भगवान गोविन्द देव जी के बाँई ओर लक्ष्मी स्वरूपा राधा रानी की मूर्ति को 1690 ई. में स्थापित किया गया था। गोविन्द देव जी के बाँई ओर इत्र सेवा के लिए सखी विशाखा है तथा तंबुल सेवा (भृंग के पत्ते चढ़ाने) सखी ललिता है। जयपुर शासकों ने आजादी के बाद पूरे जयपुर राज्य को श्री गोविन्द जी को समर्पित कर दिया गया। वो इन्हें अपना राजा मानते थे। गोविन्द देव जी को प्रत्येक आरती के साथ भोग लगाया जाता है, जिसे राजभोग कहा जाता है। जिन्हें चाँदी के बर्तनों में परोसा जाता है। जिसमें मिठाईयों की भरमार होती है। मन्दिर में सात बार आरतियाँ होती है। हर बार राधा और गोविन्द जी को नए वस्त्रों और श्रृंगार से सजाया जाता है।

लक्ष्मी नारायण जी का बिड़ला मन्दिर:-

लक्ष्मी नारायण मन्दिर को बिड़ला मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। जो जयपुर में स्थित है। इसमें भगवान नारायण जी तथा देवी लक्ष्मी जी की मूर्ति स्थापित है। जो बहुत अद्भूत तथा सुन्दर है। इस मन्दिर का निर्माण श्री रंग रानानुज दास जी ने 1904 में भगवान के स्वपन दर्शन के बाद करवाया था। यह जयपुर के मोती डूंगरी महल के नीचे स्थित है। यह मन्दिर सफेद संगमरमर पत्थरों द्वारा वास्तुकला का शानदार नमूना है।

मन्दिर में अन्य हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, हिन्दू प्रतीक तथा प्राचीन लेख तथा आभूषित मूर्तियाँ विराजमान हैं। मन्दिर में तीन गुम्बद हैं। जो भारत के तीन धर्मों को दर्शाते हैं।

मोती डूंगरी गणेश मन्दिर:-

यह मन्दिर जयपुर में मोती डूंगरी की तलहटी पर स्थित है। जो भगवान गणेश जी को समर्पित है। गणेश जी की प्रतिमा को जयपुर नरेश माधो सिंह प्रथम की पटरानी के मायके मावली से 1761 ई. में लाया गया था। मावली में यह प्रतिमा गुजरात से लाई गई थी। मान्यता है कि यह प्रतिमा 750 वर्ष पुरानी है। लोग मन्दिर में अपने नए वाहनों की पूजा के लिए आते हैं। धार्मिक लोगों का मानना है कि इससे वाहन दुर्घटना घटती नही है। गणेश जी की विशाल प्रतिमा की विशेषता यह है कि इसमें गणेश जी की सूंड दाहिनी ओर है, जिस पर सिन्दूर का चोला चढ़ाकर सुन्दर श्रृंगार किया जाता है।

इसलिए नवरात्रा, रामनवमी, दशहरा, धनतेरस और दीपावली के खास शुभ मुहूर्तों पर वाहनों की पूजा के लिए लम्बी लाइनें लग जाती है। इसके अलावा इस मन्दिर में शादी का पहला निमन्त्रण पत्र चढ़ाने

की परम्परा काफी समय से चली आ रही है। इसलिए मन्दिर से दूर-दूर से शादी के निमन्त्रण पत्र आते हैं।

शीला देवी मन्दिर:-

यह मन्दिर जयपुर के कछवाह वंश के शासकों की कुल देवी शीला माता को समर्पित है जो आमेर के महल में स्थापित है। इसमें माता अपने महिषासुर मर्दिनी के रूप में विराजमान है। मन्दिर का निर्माण महाराजा सवाई मान सिंह द्वितीय ने 1906 ई. में करवाया था। यद्यपि मन्दिर छोटा है किन्तु विशेष महत्त्व रखता है। यहाँ का लक्खी मेला बहुत प्रसिद्ध है। शीला देवी के अलावा मन्दिर में गणेश जी तथा मीणाओं की देवी हिंगलाज माँ भी विराजमान है। शीला माता को अम्बा माताजी का ही रूप माना जाता है। मान्यता है कि आमेर का नाम 'आम्बेर' अम्बा माता के नाम पर ही पड़ा है। यहाँ वर्ष में दो बार आश्विन तथा चैत्र मास में मेले भरते हैं।

इसके अलावा जयपुर के गंगा गोपाल जी मन्दिर, आनन्द कृष्ण मन्दिर, राज राजेश्वर शिवालय जी सीता राम द्वारा, लक्ष्मण द्वारा, बलदाऊ जी मन्दिर, परनामी मन्दिर, मदन मोहन मन्दिर, बिहारी जी का मन्दिर, ताड़केश्वर मन्दिर, आमेर के सूर्य मन्दिर, जगत शिरोमणी मन्दिर, अम्बिकेश्वर मन्दिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, आदि भी धार्मिक महत्त्व की स्थली है।

दौसा जिले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल:-

मेहन्दीपुर बालाजी मन्दिर:-

यह मन्दिर आगरा-जयपुर मार्ग पर सिकन्दरा से महुवा के बीच स्थित है। जो भगवान हनुमान जी को समर्पित है। मन्दिर की यह विशेषता है कि इसमें स्थापित मूर्ति पर्वत का ही अंग है। आधा मेहन्दीपुर बालाजी करौली जिले की टोडाभीम तहसील तथा आधा दौसा की सिकराय तहसील में आता है। यह मन्दिर चमत्कारी है। यहाँ पर मानसिक रोगियों का इलाज होता है। इसके अलावा मान्यता है कि भगवान अपने भक्तों को बुरी आत्माओं और परेशानियों से छुटकारा दिलाते हैं। हर मंगलवार और शनिवार को यहाँ मन्दिर में भक्तों की भीड़ लगती रहती है। भक्तगण बालाजी को बूंदी तथा लड्डू का भोग लगाते हैं। मन्दिर के सामने ही श्रीराम भगवान को समर्पित एक मन्दिर बनाया गया है, जिसमें श्रीराम जी तथा माँ सीता जी की मूर्ति विद्यमान हैं।

सोमनाथ जी मन्दिर:-

यह मन्दिर दौसा रेलवे स्टेशन से 2.5 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह मन्दिर भगवान शिव (महादेव जी) को समर्पित है। यह मन्दिर अब जीर्णोवशेष के रूप में ही है। मन्दिर बहुत प्राचीन है, जो अरावली की पहाड़ियों पर स्थित है। इसके मुख्य गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है तथा बाहर नन्दी जी विराजित हैं।

गुप्तेश्वर मन्दिर:-

गुप्तेश्वर महादेव जी का मन्दिर दौसा चगो नाके के पास लालसोट रोड़ पर स्थित है। यह मन्दिर 1945 ई. में बनवाया गया था। इसमें स्थित शिवलिंग काफी प्राचीन है। अरावली की पहाड़ियों पर स्थित यह मन्दिर अति दर्शनीय है।

नीलकण्ठ महादेव जी मन्दिर:-

यह मन्दिर भी दौसा में अरावली की पहाड़ियों पर स्थित शिवलिंग बारहवीं शताब्दी का बना हुआ है। किसी समय यहाँ प्राचीन शिव मन्दिर था।

सहजनाथ मन्दिर:-

यह मन्दिर भी भगवान शिव को समर्पित है, जिसे 800 साल पूर्व बनेदास जी ने बनवाया था।

बैजनाथ मन्दिर:-

यह मन्दिर भी नवनिर्मित मन्दिर है। लेकिन इसमें स्थापित शिवलिंग काफी पुराना है। यहाँ गणेश चतुर्थी पर प्रतिवर्ष मेला भरता है।

देवनारायण जी मन्दिर:-

यह मन्दिर दौसा में स्थित है। भगवान देवनारायण जी गुर्जर के आराध्य देव हैं। मन्दिर का निर्माण देवनारायण समिति द्वारा करवाया गया है। यह मन्दिर बहुत ही सुन्दर बना हुआ है। इस मन्दिर की वास्तुकला तथा कलाकृतियाँ काफी आकर्षक है।

सीकर जिले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल-

खाटू श्याम जी मन्दिर:-

यह मन्दिर राजस्थान का प्रसिद्ध मन्दिर है जो सीकर में स्थित है। इसका निर्माण रूप सिंह चैहान ने सन् 1027 ई0 में करवाया था। यहाँ हर साल लाखों भक्त दर्शानार्थ आते हैं। खाटू श्याम जी को लखदाता, हारे का सहारा, शीश का दानी तथा खाटू नरेश के नाम से भी जाना जाता है। मन्दिर सफेद संगमरमर पत्थरों से निर्मित है तथा मन्दिर में खाटू श्याम जी के शीश की प्रतिमा विद्यमान है। यहाँ कार्तिक तथा फाल्गुन मास में मेले लगते हैं। मन्दिर में विशाल जलाशय भी बना हुआ है।

जीण माता मन्दिर:-

यह मन्दिर सीकर जिले से 30 किलोमीटर दूर रेबासा गाँव के पास स्थित है। इस मन्दिर में शक्ति की देवी (जीण माता) की पूजा की जाती है। माता की मूर्ति 1000 साल पुरानी है। मन्दिर का मुख्य गुर्भगृह बहुत सुन्दर है तथा छत और दीवारें चाँदी से सुसज्जित हैं। माना जाता है कि मन्दिर की स्थापना पाण्डवों द्वारा अज्ञातवास के समय की गई थी। यहाँ वर्ष में नवरात्री के महिने चैत्र एवं आश्विन में मेले लगते हैं।

हर्षनाथ मन्दिर:-

यह मन्दिर सीकर जिले से लगभग 21 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी पर हर्षनाथ मन्दिर है। यह मन्दिर भगवान शिव को समर्पित है। यह समुद्र तल से लगभग 914 मीटर की ऊचाँई पर स्थित है। यह एक बहुत प्राचीन मन्दिर है। जिसका निर्माण शैव संत भवरक्त ने करवाया था, जो चैहान शासक विग्रहराज प्रथम के समय के थे। हर्षनाथ की पहाड़ी पर स्थित मन्दिर 300 वर्ष प्राचीन है। मन्दिर में एक गर्भगृह, अंतराल, कक्षासन युक्त रंग मण्डप है। वर्तमान में मन्दिर खण्डित अवस्था में है। इसमें देवी देवताओं की प्रतिमाओं के अलावा नृतकों, संगीतज्ञों, योद्धाओं की सजावटी दृश्यावलियाँ का शिल्प कौशल देखने योग्य है।

गणेश्वर धाम:-

गणेश्वर धाम सीकर जिले के नीम का थाना तहसील में एक गाँव है। गणेश्वर धाम एक तीर्थ यात्रा के साथ-साथ एक मजेदार पिकनिक स्थल भी है। यहाँ सल्फर युक्त गर्म पानी का एक बड़ा कुण्ड बना हुआ है। जिसमें एक प्राकृतिक धारा से निकला गर्म पानी एकत्र किया जाता है। कुण्ड के स्थान का बहुत महत्त्व है। माना जाता है कि इसके स्नान से त्वचा रोगी ठीक हो जाता है। गणेश्वर धाम क्षेत्रों में खुदाई में 4000 साल पुरानी सभ्यताओं के अवशेषों का खुलासा किया गया है। गणेश्वर धाम संस्कृति को पूर्व हड़प्पा अवधि के लिए निर्धारित किया जा सकता है। गणेश्वर ने मुख्य रूप से हड़प्पा को ताँबा वस्तुओं की आपूर्ति की थी।

शाकम्भरी मन्दिर:-

यह एक शक्ति पीठ है। यहाँ शंकरी माता का 7वीं सदी का मन्दिर बना हुआ है। यहाँ पर लोग घूमने फिरने व शंकरी माता के दर्शन के लिए आते हैं। यह तीन तरफ की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहाँ सात जल कुण्ड बने हुए हैं।

झुंझुनू जिले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल

राणी सती मन्दिर:-

यह मन्दिर शहर के बीचों बीच स्थित है। इसकी बाहरी अवलोकन किसी राजमहल जैसा है। झुंझुनू में पूरे प्रदेश में राणी सती की पूजा की जाती है। इनका नाम नारायणी बाई था। इनका विवाह तनधन दास से हुआ था। मुकलावे के बाद जब नारायणी बाई अपने पति के साथ ससुराल जा रही थी, तब हिसार नवाब के सैनिकों ने धोखे से तनधन दास जी की हत्या कर दी। तब नारायणी बाई तलवार लेकर सैनिकों पर टूट पड़ी थी। कई सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया गया। जिसे देखकर बाकी के सैनिक भाग खड़े हो गए।

इसके बाद नारायणी बाई अपने पति के साथ वहाँ पर सती हो गई। इनके परिवार की कुल 13 स्त्रियाँ सती हो गई। राणी सती का मन्दिर 400 वर्ष पुराना है। पूरा मन्दिर संगमरमर से निर्मित है तथा बाहरी दीवारों पर शानदार रंगीन चित्रकारी की गई है। यह मन्दिर सम्मान, ममता एवं स्त्री शक्ति का प्रतीक है। यहाँ प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्णा अमावस्या को मेला भरता है।

हाजीब शक्कर बार शाह की दरगाह:-

झुंझुनू जिले के चिड़ावा तहसील के नरहड़ कस्बे में 750 वर्ष (पुरानी) प्राचीन पवित्र दरगाह हाजीब शक्कर बार शाह को समर्पित है। जो कौमी एकता की एक जीवन्त मिसाल है। इस दरगाह की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ सभी धर्मों के लोग अपनी-अपनी धार्मिक पद्धति से पूजा कर सकते हैं। यहाँ कृष्णा जन्माष्टमी पर विशाल तीन दिवसीय मेला भरता है। जो कृष्ण पक्ष की छठ से शुरू होता है। यह दरगाह साम्प्रदायिक सद्भावना की प्रतीक है। यहाँ पर हिन्दू जाति नव-विवाहित के गठजोड़े की जात एवं बच्चों के जडूले उतरवाने आते हैं। मान्यता है कि यहाँ दरगाह के गुम्बद से शक्कर बरसती थी। इसी कारण दरगाह शक्कर बार शाह के नाम से जानी जाती है। शक्कर बार शाह अजमेर के सूफी संत ख्वाजा मोइनूद्दीन चिश्ती के समकालीन थे तथा सिद्ध पुरूष थे। राजस्थान एवं हरियाणा में बाबा लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं। बाबा के बखान में गाए जाने वाले गीतों को जकड़ी कहा जाता है। यहाँ संदल की मिट्टी को खाके शिफा कहा जाता है। इसके मलने से पागलपन रोगी ठीक हो जाता है। हजरत के अस्ताने पर एक चाँदी का दीपक सदा जलता रहता है। चिराग की काजल बहुत ही चमत्कारी है। इसको लगाने से आँखों के रोग दूर हो जाते हैं। बाबा जी को बागड़ का धनी नाम से भी जाना जाता है।

हजरत कमरूद्दीन शाह की दरगाह:-

नेहरा पहाड़ की तलहटी में खेतड़ी महल के पश्चिम में स्थित कमरूद्दीन शाह की दरगाह एक खुला

व्यवस्थित परिसर है। जिसमें मस्जिद और मदरसा बने हुए हैं। यहाँ प्राचीन भित्ति चित्र अभी भी देखे जा सकते हैं। इसके मध्य में सूफी संत कमरूद्दीन शाह की अलंकृत दरगाह बनी हुई है।

अलवर जिले के धार्मिक स्थल:-

ताल वृक्ष:-

यह अलवर से 40 किमी. की दूरी पर बना वह स्थल है। जहाँ मांडव ऋषि ने तपस्या की थी। महाभारत काल के अनुसार अर्जुन ने अज्ञातवास के दौरान अपने हथियार तालवृक्ष स्थित एक विशाल वृक्ष के तने में छिपाए थे। ताल वृक्ष मन्दिर परिसर में ठण्डे एवं गर्म पानी के दो कुण्ड़ बने हुए हैं। यहाँ तीर्थयात्री स्नान करते हैं। शाम के समय मन्दिरों की घंटियाँ की मधुर ध्वनि, पक्षियों का कलरव तथा बन्दरों की उछल कूद, बरबस ही पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

नारायणी माता:-

अलवर के दक्षिण-पश्चिम की ओर 80 किमी. की दूरी पर नारायणी माता को समर्पित एक मन्दिर, स्थानीय लोगों की आस्था का केन्द्र है। यहाँ प्रतिवर्ष बैशाख मास में एक मेले का आयोजन होता है। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शनार्थ आते हैं। यहाँ गर्म पानी का एक झरना है। जिसमें भक्तगण स्नान करते हैं।

तिजारा जैन मन्दिर:-

अलवर दिल्ली मार्ग से लगभग 60 किमी. की दूरी पर यह जैन तीर्थ स्थल बना हुआ है। आठवें तीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रभा भगवान की स्मृति में यह प्राचीन मन्दिर बनवाया गया था। राजा महासेन एवं रानी सुलक्षणा के पुत्र ने अपने इस राज्य पर शासन करने के बाद, यहीं पर दीक्षा प्राप्त की थी। कई वर्षों की मानव सेवा के बाद, उन्होंने एक माह तक ध्यान किया तथा निर्वाण प्राप्त किया था। मन्दिर में भगवान श्री चन्द्रप्रभु की धवल पाषाण की पद्मासन मुद्रा में मनोहरी मूर्ति विराजित है।

नीलकण्ठ मन्दिर:-

सरिस्का से टहला गेट की और लगभग 30 किमी. की दूरी पर राजौरगढ़ में नीलकण्ठ मन्दिर बना हुआ है। किसी समय यहाँ खजुराहों शैली तथा स्थापत्य से प्रभावित अनेक मन्दिर थे। पहाड़ियों से घिरे, इस मन्दिर के गर्भगृह में काले पत्थर का शिवलिंग स्थापित है। यहाँ अखण्ड़ ज्योति जलती रहती है। मन्दिर का शिखर भाग उत्तर भारतीय शैली का है। अधो भाग में चारों और देवी-देवताओं, अप्सराओं, नायक-नायिकाओं की मूर्तियाँ उत्कीर्ण की हुई है। ब्रह्म, शिव, विष्णु, सूर्य, गणेश, नृसिंह अवतार आदि की मूर्तियाँ बनी है, जो पौराणिक कथाओं को कलात्मक स्वरूप में अभिव्यक्त करती है। नीलकण्ठ मन्दिर से कुछ दूरी पर जैन तीर्थंकर शान्ति नाथ जी की 6 फुट ऊँची तथा 6 फुट चैड़ी मूर्ति स्थापित है। जिसे नौ गजा भी कहते हैं। प्रतिमा के सिर के पीछे एक प्रभामण्डल शोभायमान है। मन्दिर के खण्डहरों में नृत्यांगनाओं, अप्सराओं, देवी, देवताओं, हाथियों इत्यादि की मूर्तियाँ और अवशेष दर्शनीय हैं।

निष्कर्ष:-

धार्मिक स्थल- सामाजिक समरसता, परस्पर सद्भावना, साम्प्रदायिक एकता, सौहाद्र, के प्रतीक हैं। धार्मिक स्थलों की यात्रा इन्सान के मन की शान्ति, मनोबल को बढ़ाने, आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ाने का साधन है। धार्मिक स्थलों की यात्रा किसी धार्मिक भावना से ही नहीं की जाती। कभी-कभी उस धार्मिक स्थल के इतिहास को जानने, वहाँ की आस्था का मान्यताओं को जानने के लिए भी की जाती है। प्राचीन स्थलों की वास्तुकला दर्शनावालियाँ, चित्रकारियाँ, शिलालेखों की जानकारी प्राप्त करने के लिए या किसी शोद्यार्थी के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। धार्मिक स्थल आस्था के प्रतीक हैं। इसलिए उनका रख-रखाव करना चाहिए। पुराने मन्दिरों, मस्जिदों, चर्चों, गुरूद्वारों का जीर्णोद्धार करवाने में सरकार को कदम उठाने चाहिए।

REFERENCES

1. बत्रा (1990):- ''राजस्थान में पर्यटन- समस्याऐं, संभावित और भावी संभावनाऐं''।
2. उत्तरकाशी के धार्मिक एवं पर्यटन स्थल: डॉ. सुरेन्द्र मेहरा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. सुधीर (1992):- ''केरल में पर्यटन- समस्याऐं एवं संभावनाऐं''।
4. हाई हिमाचल अननोन वैलीज: हरीश कपाड़िया: इन्डस पब्लिशिंग, नई दिल्ली।
5. हिमालयन रिवर्स, लेक्स एण्ड ग्लेशियर्स: एस. एस. नेगी: इन्डस पब्लिशिंग, नई दिल्ली।
6. व्यास, राजेश कुमार (2004) राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध, राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर।
7. कपूर, विमल कुमार (2008) पर्यटन प्रबंध एवं मानव संसाधन विकास, रजत प्रकाशन नई दिल्ली